

लघु शोध-प्रबंध

कैथी लिपि में लिखित भाषाई स्वरूपों का विश्लेषण

प्रस्तुतकर्ता:

लेखा डालमिया

बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत

मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय

सत्र: 2025-26

आभार

मैं अपने मार्गदर्शक डॉ चन्दन मिश्रा , संस्कृत विभाग के शिक्षकों एवं परिवार, अपनी मित्र आस्था मिश्रा एवं विशेष व्यक्ति के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से यह शोध कार्य पूर्ण हुआ।

सार

यह शोध कैथी लिपि में प्रयुक्त भाषाई स्वरूपों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें ऐतिहासिक, भाषाई तथा सामाजिक आयामों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय लिपियों का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। कैथी लिपि उत्तर भारत में विकसित एक महत्वपूर्ण लिपि रही है जिसका उपयोग प्रशासनिक तथा सामाजिक कार्यों में व्यापक रूप से किया जाता था। इस शोध का उद्देश्य इसके भाषाई स्वरूपों का विश्लेषण करना है। भारतीय लिपियों का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। कैथी लिपि उत्तर भारत में विकसित एक महत्वपूर्ण लिपि रही है जिसका उपयोग प्रशासनिक तथा सामाजिक कार्यों में व्यापक रूप से किया जाता था। इस शोध का उद्देश्य इसके भाषाई स्वरूपों का विश्लेषण करना है। भारतीय लिपियों का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। कैथी लिपि उत्तर भारत में विकसित एक महत्वपूर्ण लिपि रही है जिसका उपयोग प्रशासनिक तथा सामाजिक कार्यों में व्यापक रूप से किया जाता था। इस शोध का उद्देश्य इसके भाषाई स्वरूपों का विश्लेषण करना है। भारतीय लिपियों का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। कैथी लिपि उत्तर भारत में विकसित एक महत्वपूर्ण लिपि रही है जिसका उपयोग प्रशासनिक तथा सामाजिक कार्यों में व्यापक रूप से किया जाता था। इस शोध का उद्देश्य इसके भाषाई स्वरूपों का विश्लेषण करना है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

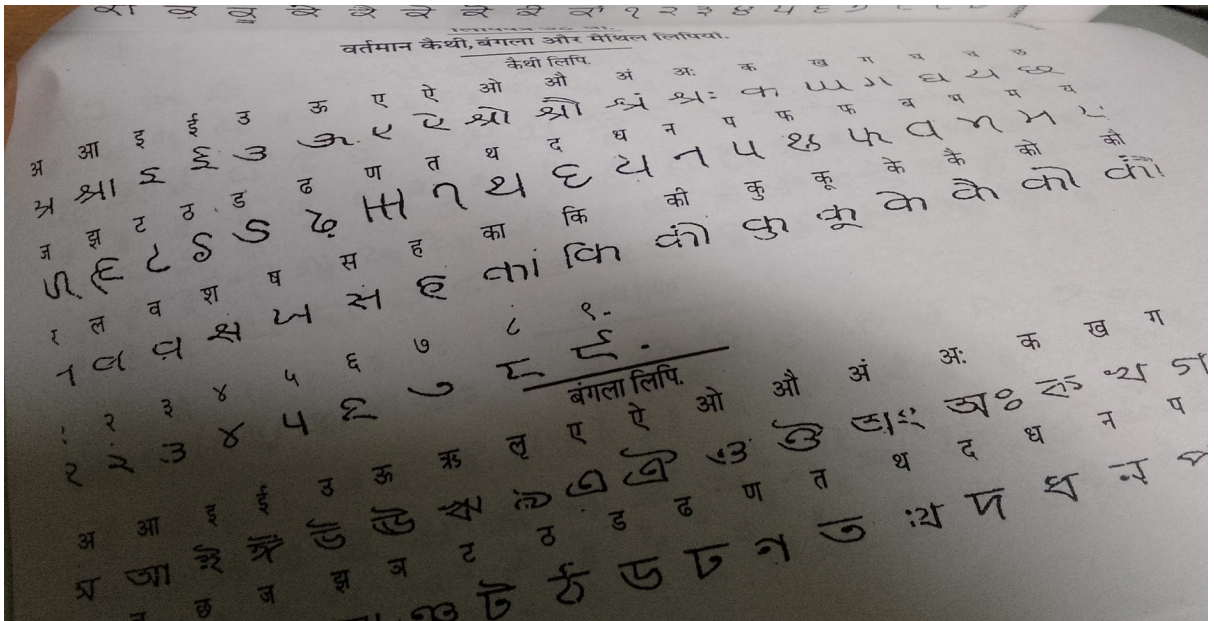
कैथी लिपि का विकास मध्यकालीन भारत में हुआ। इसका प्रयोग विशेष रूप से बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। यह लिपि कायस्थ समुदाय से जुड़ी रही है। कैथी लिपि का विकास मध्यकालीन भारत में हुआ। इसका प्रयोग विशेष रूप से बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। यह लिपि कायस्थ समुदाय से जुड़ी रही है। कैथी लिपि का विकास मध्यकालीन भारत में हुआ। इसका प्रयोग विशेष रूप से बिहार और

पूर्वी उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। यह लिपि कायस्थ समुदाय से जुड़ी रही है। कैथी लिपि का विकास मध्यकालीन भारत में हुआ। इसका प्रयोग विशेष रूप से बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। यह लिपि कायस्थ समुदाय से जुड़ी रही है। कैथी लिपि का विकास मध्यकालीन भारत में हुआ। इसका प्रयोग विशेष रूप से बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। यह लिपि कायस्थ समुदाय से जुड़ी रही है।

संरचना

कैथी लिपि सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक है। इसमें संयुक्ताक्षरों का प्रयोग सीमित है तथा लेखन शैली प्रवाहमयी है। कैथी लिपि सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक है। इसमें संयुक्ताक्षरों का प्रयोग सीमित है तथा लेखन शैली प्रवाहमयी है। कैथी लिपि सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक है। इसमें संयुक्ताक्षरों का प्रयोग सीमित है तथा लेखन शैली प्रवाहमयी है। कैथी लिपि सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक है। इसमें संयुक्ताक्षरों का प्रयोग सीमित है तथा लेखन शैली प्रवाहमयी है। कैथी लिपि सरल, स्पष्ट और व्यावहारिक है। इसमें संयुक्ताक्षरों का प्रयोग सीमित है तथा लेखन शैली प्रवाहमयी है।

चित्र 1. कैथी अक्षर एवं अंक



चित्र 1. प्राचीन भारतीय लिपिमाला. डॉ GAURISHANKAR. OJHA लिपिपत्र 78. Plate LXXVIII

भाषाई स्वरूप

कैथी लिपि में लिखित भाषा में स्थानीयता का प्रभाव प्रमुख है। इसमें भोजपुरी, मगही और मैथिली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। कैथी लिपि में लिखित भाषा में स्थानीयता का प्रभाव प्रमुख है। इसमें भोजपुरी, मगही और मैथिली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। कैथी लिपि में लिखित भाषा में स्थानीयता का प्रभाव प्रमुख है। इसमें भोजपुरी, मगही और मैथिली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। कैथी लिपि में लिखित भाषा में स्थानीयता का प्रभाव प्रमुख है। इसमें भोजपुरी, मगही और मैथिली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। कैथी लिपि में लिखित भाषा में स्थानीयता का प्रभाव प्रमुख है। इसमें भोजपुरी, मगही और मैथिली के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं।

क्षेत्रीय प्रभाव

भाषाई विविधता के कारण कैथी लिपि में क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। यह इसे एक जीवंत लिपि बनाती है। भाषाई विविधता के कारण कैथी लिपि में क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। यह इसे एक जीवंत लिपि बनाती है। भाषाई विविधता के कारण कैथी लिपि में क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। यह इसे एक जीवंत लिपि बनाती है। भाषाई विविधता के कारण कैथी लिपि में क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। यह इसे एक जीवंत लिपि बनाती है। भाषाई विविधता के कारण कैथी लिपि में क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। यह इसे एक जीवंत लिपि बनाती है।

तुलनात्मक अध्ययन

देवनागरी और शारदा लिपि की तुलना में कैथी अधिक व्यावहारिक एवं प्रशासनिक उपयोग के लिए उपयुक्त रही है। देवनागरी और शारदा लिपि की तुलना में कैथी अधिक व्यावहारिक एवं प्रशासनिक उपयोग के लिए उपयुक्त रही है। देवनागरी और शारदा लिपि की तुलना में कैथी अधिक व्यावहारिक एवं प्रशासनिक उपयोग के लिए उपयुक्त रही है। देवनागरी और शारदा लिपि की तुलना में कैथी अधिक व्यावहारिक एवं प्रशासनिक उपयोग के लिए उपयुक्त रही है। देवनागरी और शारदा लिपि की तुलना में कैथी अधिक व्यावहारिक एवं प्रशासनिक उपयोग के लिए उपयुक्त रही है।

प्रशासनिक उपयोग

भूमि अभिलेख, न्यायिक दस्तावेज तथा व्यापारिक लेखन में इसका व्यापक उपयोग हुआ। बिहार राज्य अभिलेखागार में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। भूमि अभिलेख, न्यायिक दस्तावेज तथा व्यापारिक लेखन में इसका व्यापक उपयोग हुआ। बिहार राज्य अभिलेखागार में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। भूमि अभिलेख, न्यायिक दस्तावेज तथा व्यापारिक लेखन में इसका व्यापक उपयोग हुआ। बिहार राज्य अभिलेखागार में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। भूमि अभिलेख, न्यायिक दस्तावेज तथा व्यापारिक लेखन में इसका व्यापक उपयोग हुआ। बिहार राज्य अभिलेखागार में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। भूमि अभिलेख, न्यायिक दस्तावेज तथा व्यापारिक लेखन में इसका व्यापक उपयोग हुआ। बिहार राज्य अभिलेखागार में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष

कैथी लिपि भारतीय सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अध्ययन से लोकभाषाओं के विकास को समझा जा सकता है। कैथी लिपि भारतीय सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अध्ययन से लोकभाषाओं के विकास को समझा जा सकता है। कैथी लिपि भारतीय सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अध्ययन से लोकभाषाओं के विकास को समझा जा सकता है।

कैथी लिपि भारतीय सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अध्ययन से लोकभाषाओं के विकास को समझा जा सकता है। कैथी लिपि भारतीय सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इसके अध्ययन से लोकभाषाओं के विकास को समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची

Grierson – Linguistic Survey of India

Salomon – Indian Epigraphy

बिहार राज्य अभिलेखागार – कैथी अभिलेख

<https://www.unicode.org/L2/L2005/05343-kaithi.pdf>

Internet archives for books